DSSSB TGT & PGT
दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
ROJGAR ANKIT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
Demo-02
संज्ञा प्रकरण
Part-02
LIVE 13-03-2024 05:00 PM

दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
DSSSB TGT (संस्कृत)
Part(A+B)
SCHOLAR BATCH
FEATURES
Live Classes
Mock Test
Doubt Group
Class Notes PDF
Experienced Teachers
₹999/-
20% off
Coupon Code: SAN20
₹799/-
Registration Starts from 6th March
Classes Start from 11th March
JOIN US ON
DOWNLOAD THE RWA APP NOW
Google Play

TIME TABLE
DSSSB TGT
PRT (Part-A)
Scholar Batch
C.A
LIVE 06:00 AM
MATHS
LIVE 08:00 AM
हिंदी
LIVE 09:00 AM
ENGLISH
LIVE 10:00 AM
HISTORY
LIVE 11:00 AM
From 12 March
GEOGRAPHY
LIVE 01:00 PM
REASONING
LIVE 03:00 PM
POLITY
LIVE 06:00 PM
Classes Start from 11th March

व्याकरण - संज्ञा प्रकरण शाम 6 बजे

साहित्य → सुबह 11 बजे

रविवार - प्रैक्टिस सेट

अ इ उ ऋ → 18 भेद

ऌ → 12 भेद → दीर्घाभाव

ए ओ ऐ औ → 12 भेद → ह्रस्वाभाव

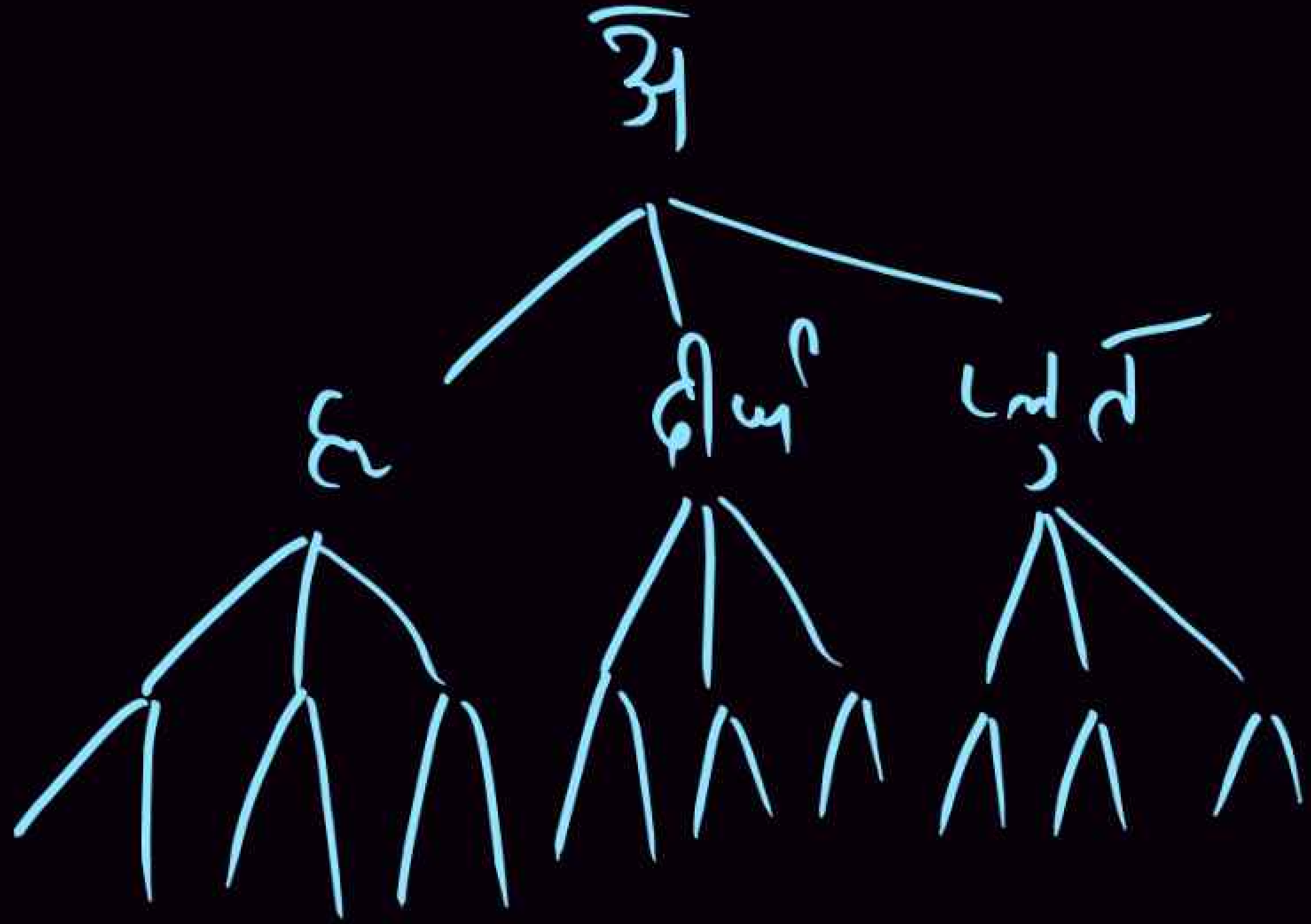

$3 \times 3 = 9$

$9 \times 2 = 18$

अइउण्

ऋऌक्

इ उ, ऋ, ऌ

अक् इक् उक् → उ ऋ ऌ

अ इ उ, ऋ ऌ

सवर्ण संज्ञा

प्रत्याहार

अल् ⇒ अच् + हल्

क्र.सं.	प्रत्याहार	वर्ण
1.	अण्	अ, इ, उ
2.	अक्	अ, इ, उ, ऋ, लृ
3.	अच्	अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ
4.	अट्	अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य्, व्, र्
5.	अण्	अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह्, य्, व्, र्, ल्
6.	अम्	अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्
7.	अश्	अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह्, य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्
8.	अल्	सभी स्वर तथा सभी व्यञ्जन वर्ण

9.	इक्	इ, उ, ऋ, ऌ
10.	इच्	इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ
11.	इण्	इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ, ह्, य्, व्, र्, ल्
12.	उक्	उ, ऋ, ऌ
13.	एङ्	ए, ओ
14.	एच्	ए, ओ, ऐ, औ
15.	ऐच	ऐ, औ
16.	हश्	ह्, य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्
17.	हल्	सभी व्यंजन
18.	यण्	य्, व्, र्, ल्
19.	यम्	य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ, ण्, न्

20.	यञ्	य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ, ण्, न्, झ्, भ्
21.	यय्	य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्
22.	यर्	य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्
23.	वश्	व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्,
24.	वल्	व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्, ह्
25.	रल्	र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, च्, ट्, त्, क्, प्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, श्, ष्, स्, ह्

26.	मय्	म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्
27.	ङम्	ङ, ण्, न्
28.	झष्	झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्
29.	झश्	झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्,
30.	झय्	झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्,
31.	झर्	झ्, भ्, घ्, ढ्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्
32.	झल्	ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्, ह्
33.	भष्	भ्, घ्, ढ्, ध्

34.	जश्	ज्, ब्, ग्, ड्, द्
35.	बश्	ब्,ग्, ड्, द्
36.	खय्	ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्,
37.	खर्	ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्,
38.	छव्	छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्
39.	चर्	च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्
40.	शर्	श्, ष्, स्
41.	शल्	श्, ष्, स्, ह्
42.	रँ	र्, ल्
43.	चय्	च्, ट्, त्, क्, प्
44.	ञम्	ञ्, म्, ङ्, ण्, न्

सवर्ण संज्ञा विधायक

- तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्

तालु आदि स्थान और आभ्यन्तर प्रयत्न ये दो जिस वर्ण का जिस वर्ण के साथ तुल्य हों, वे वर्ण आपस में सवर्णसंज्ञक होते हैं।

उच्चारण स्थान

अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः

इचुयशानां तालु।

ऋटुरषाणां मूर्धा ।

लृतुलसानां दन्ताः।

उपूपध्मानीयानामोष्ठौ ।

ञमङणनानां नासिका च ।

एदैतोः कण्ठतालु।

ओदौतोः कण्ठोष्ठम्।

वकारस्य दन्तोष्ठम्।

जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम् ।

नासिकाऽनुस्वारस्य ।

ॅक ॅख

प्रयत्नाः

- यत्नो द्विधा - आभ्यन्तरो बाह्यश्च ।

आद्यः पञ्चधा- स्पृष्टेषत्स्पृष्टेषद्विवृतविवृतसंवृतभेदात् ।

- ✓ तत्र स्पृष्टं प्रयत्नं स्पर्शानाम् ।
- ✓ ईषत्स्पृष्टमन्तः स्थानाम्।
- ✓ ईषद्विवृतमूष्मणाम्।
- ✓ विवृतं स्वराणाम् ।
- ✓ ह्रस्वस्यावर्णस्य प्रयोगे संवृतम् । प्रक्रियादशायां तु विवृतमेव ।

प्रयत्न

आभ्यन्तर (5) — बाह्य

स्पृष्ट | स्पर्श (क् से म्) 25

थोड़ा ← ईषत् स्पृष्ट : (अंत: स्थ) य् व् र् ल् (यण्)

थोड़ा ईषत् विवृत (ऊष्म) श् ष् स् (शल्)

विवृत [अच् (स्वर)]

संवृत ह्रस्व अ

पु, तु, टु, चु, कु

- बाह्यप्रयत्नस्त्वेकादशधा - विवारः संवार : श्वासो नादो घोषोऽघोषोऽल्पप्राणो महाप्राण उदात्तोऽनुदात्तः स्वरितश्चेति ।
  - ✓ खरो विवाराः श्वासा अघोषाश्च ।
  - ✓ हशः संवारा नादा घोषाश्च ।
  - ✓ वर्गाणां प्रथमतृतीयपञ्चमा यणश्चाल्पप्राणाः ।
  - ✓ वर्गाणां द्वितीयचतुर्थौ शलश्च महाप्राणाः ।
  - ✓ उदात्तोऽनुदात्तः स्वरितश्चेति

बाह्य प्रयत्न

विवार श्वास अघोष	संवार नाद घोष	(19) अल्पप्राण	(14) महाप्राण	उदात्त अनुदात्त स्वरित
(खर्) (13 वर्ण)	(हश्) (20 वर्ण)	1,3,5 + यण्	2,4 + शल्	स्वर
1,2 + श् ष् स्	3,4,5 + यण् + ह	क् ग् ङ्	ख् घ्	
क् ख्	ग् घ् ङ् + य् व् र् ल्	च् ज् ञ्		
च् छ्	ज् झ् ञ्			
ट् ठ्	ड् ढ् ण्			
त् थ्	द् ध् न्			
प् फ्	ब् भ् म्			

यत्नो द्विधा - आभ्यन्तरो बाह्यश्च । प्रयत्न दो प्रकार के हैं- एक आभ्यन्तर - प्रयत्न और दूसरा बाह्य-प्रयत्न |

आद्यः पञ्चधा- स्पृष्टेषत्स्पृष्टेषद्विवृतविवृतसंवृतभेदात् । पहला आभ्यन्तर प्रयत्न स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, ईषद्विवृत, विवृत और संवृत के भेद से पाँच प्रकार का है।

स्पर्शसंज्ञक (क से म तक के वर्ण)वर्णों का स्पृष्ट-प्रयत्न है।

अन्तःस्थसंज्ञक (यण् प्रत्याहार य्, व्, र्, ल्) वर्णों का ईषत्स्पृष्ट-प्रयत्न है।

ऊष्मसंज्ञक (शल् अर्थात् श्, ष् स्) वर्णों का ईषद्विवृत प्रयत्न है।

स्वरसंज्ञक (अच्) वर्णों का विवृत- प्रयत्न है।

ह्रस्व अवर्ण का उच्चारणावस्था में संवृत - प्रयत्न और प्रयोगसिद्धि की अवस्था में विवृत प्रयत्न ही रहता है।

बाह्यप्रयत्न

विवारः संवारः श्वासो नादो घोषोऽघोषोऽल्पप्राणो महाप्राण उदात्तोऽनुदात्तः स्वरितश्चेति ।

विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त और स्वरित के भेद बाह्यप्रयत्न ग्यारह प्रकार का होता है।

- खरो विवाराः श्वासा अघोषाश्च । खर् प्रत्याहारस्थ वर्णों का विवार, श्वास और अघोष प्रयत्न है। खर् प्रत्याहार अर्थात् ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष, स् इन सबका विवार, श्वास, अघोष ये तीनों प्रयत्न हैं।

- हशः संवारा नादा घोषाश्च । हश् प्रत्याहार के वर्णों का संवार, नाद और घोष प्रयत्न है। हश् प्रत्याहार में ह्, य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, द, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द् ये वर्ण आते हैं, इन सबों का संवार, नाद, घोष ये तीनों प्रयत्न हैं।

- वर्गाणां प्रथमतृतीयपञ्चमा यणश्चाल्पप्राणाः । वर्गों के प्रथम, तृतीय, पंचम अक्षर और यण् का अल्पप्राण प्रयत्न होता है। वर्ग के प्रथम अक्षर हैं- क्, च्, ट्, त्, प, तृतीय हैं- ग्, ज्, ड्, द्, ब्, पंचम अक्षर हैं- ङ, ञ्, ण्, न्, म् और यण् हैं- य्, व्, र् और ल्। इनका अल्पप्राण प्रयत्न है।

- वर्गाणां द्वितीयचतुर्थौ शलश्च महाप्राणाः । वर्गों के द्वितीय, चतुर्थ अक्षर और शल् का महाप्राण प्रयत्न होता है। वर्ग के द्वितीय अक्षर हैं- ख्, फ्, छ्, व्, थ् और चतुर्थ हैं- घ्, झ्, द, ध्, भ् तथा शल् हैं- श्, ष्, स्, ह्। इनका महाप्राण प्रयत्न है।

सवर्ण

उच्चारण स्थान — प्रयत्न

ऌ लृ क्या ये सवर्ण हैं ?

मूर्धा — दन्त

विवृत

वार्तिकम् ऋलृवर्णयोर्मिथः सावर्ण्यं वाच्यम्

ऋ और लृ वर्ण की आपस में सवर्णसंज्ञा होती है, ऐसा कहना चाहिए।

अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः

अप्रत्यय अण् और उदित् ये सवर्ण के बोधक अर्थात् ग्राहक होते हैं। कु, चु, टु, तु, पु ये ही उदित् हैं, क्योंकि इन पाँचों की ही प्राचीन आचार्यों ने उदित् संज्ञा की है ।

अइउण्
ऋऌक्
एओङ्
ऐऔच्
हयवरट्
लण्

कु => क् ख् ग् घ् ङ्

जिस सूत्र में अण् विधीयमान अर्थात् विधेय नहीं है, वहाँ एक अण् प्रत्याहार के वर्ण से उसके अन्य सवर्णी वर्णों का ग्रहण किया जाता है। जैसे इको यणचि में में इक् प्रत्याहार से केवल इ, उ, ऋ और लृ ही नहीं लिए जाते अपितु ई, ऊ, ॠ आदि दीर्घ, प्लुत, उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, अनुनासिक, अननुनासिक आदि सभी अठारह भेदों का ग्रहण किया जाता है। तात्पर्य यह है कि जिन-जिन वर्णों की आपस में तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् से सवर्णसंज्ञा हुई है। वे यदि अण् प्रत्याहार में आते हैं तो वे अपने सवर्णियों के ग्राहक अर्थात् बोधक होते हैं। एक के ग्रहण से दूसरे का ग्रहण हो जाता है। यह नियम अण् के लिए है। शेष वर्णों में उदित होना जरूरी है, तभी सवर्ण का ग्रहण किया जायेगा।

तात्पर्य यह है कि इस सूत्र में कथित अण् से अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह्, य्, व्, र्, ल् का बोध होता है और अन्यत्र अण् से अ, इ, उ का मात्र बोध होता है।

सुधी + उपास्य: = सुध्युपास्य:

इको यणचि

इक् + अच् = यण्

इ उ ऋ ऌ — य् व् र् ल्